NEXT IAS

मध्यकालीन भारत का इतिहास

सिविल सेवा परीक्षा 2027

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
कॉर्पोरेट कार्यालय: 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
संपर्क सूत्र: 011-45124660, 8860378007
ई-मेल करें: infomep@madeeasy.in
विज़िट करें: www.madeeasypublications.org

मध्यकालीन भारत का इतिहास

© **कॉपीराइट: Made Easy Publications Pvt. Ltd.**
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण: 2024
द्वितीय संस्करण: 2025
तृतीय संस्करण: 2026

विषयसूची

मध्यकालीन भारत का इतिहास

इकाई–I: मध्यकालीन भारत का आरंभ

अध्याय 1

प्रारंभिक मध्यकालीन भारत 2
(Early Medieval India) 2
1.1 सामंतवाद (Feudalism) 2
भारत में सामंतवाद (Feudalism in India) 2
भूमि अनुदान में परिवर्तन (Changes in Land Grant) 3
1.2 भारत और विश्व संबंध (India and World Relations) 3
अरब (Arab) 3
भारत के साथ अरब संपर्क (Arab Contact with India) 4
सिंध की स्थिति (Condition of Sindh) 4
सिंध पर अरबों की विजय (Arab Conquest of Sindh) 4
विजय का महत्त्व (Significance of Conquest) 5
अफ्रीका (Africa) 5
पूर्वी एशिया (East Asia) 5
भारत और जापान (India and Japan) 6
भारत और कोरिया (India and Korea) 6
दक्षिण-पूर्व एशिया (South-East Asia) 6
पूर्व मध्य काल का भारत: महत्त्वपूर्ण तथ्य
(Early Medieval India: Important Facts) 7

अध्याय 2

उत्तर भारत के राजवंश 8
(Dynasties of North India) 8
2.1 पाल (Palas) 8
परिचय (Introduction) 8
राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र (Political Sphere of Influence) 8
2.2 प्रतिहार (8वीं शताब्दी ई.) [Pratiharas (8th Century)] 10
परिचय (Introduction) 10
प्रभाव का राजनीतिक क्षेत्र
(Political Sphere of Influence) 10
2.3 राष्ट्रकूट (Rashtrakutas) 12
2.4 त्रिपक्षीय संघर्ष (Tripartite Struggle) 12
कन्नौज का महत्त्व (Significance of Kannauj) 12

अध्याय 3

दक्षिण भारत के राज्य 15
(Kingdoms of South India) 15
3.1 परिचय (Introduction) 15
3.2 चोल (Cholas) 15
परिचय (Introduction) 15
उत्तरवर्ती चोल (Later Cholas) 15
महत्त्वपूर्ण शासक (Important Rulers) 15
राजराज चोल प्रथम (985 – 1014 ई.) 16
राजेंद्र चोल प्रथम (1014 – 44 ई.) 16
राजव्यवस्था (Polity) 17
प्रशासन (Administration) 17
प्रांतीय प्रशासन (Provincial Administration) 17
ग्राम सभाएँ (Village Assemblies) 17
सेना (Millitary) 17
राजस्व (Revenue) 18
धर्म (Religion) 18
अर्थव्यवस्था (Economy) 18
समाज (Society) 18
साहित्य (Litreture) 19
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) 19
साहित्य (Litreture) 20
राजवंश का महत्त्व (Significance of Dynasty) 20
3.3 चेर (Cheras) 20
परिचय (Introduction) 20
उत्तरवर्ती चेर (Later Cheras) 20
राजव्यवस्था एवं प्रशासन (Polity and Administration) 20
धर्म (Religion) 21
अर्थव्यवस्था (Economy) 21
समाज (Society) 21
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) 21
3.4 पांड्य (Pandyas) 21
परिचय (Introduction) 21
उत्तरवर्ती पांड्य (Later Pandyas) 21
राजनीतिक इतिहास (Political History) 22
राजव्यवस्था (Polity) 22
प्रशासन (Administration) 23

धर्म (Religion)..23
अर्थव्यवस्था (Economy)...23
साहित्य (Litreture)..23
कला एवं वास्तुकला (Art and Architecture).............23
राजवंश का महत्त्व (Importance of Dynasty) 24

अध्याय 4

राजपूत (Rajputs) 28
4.1 परिचय (Introduction).. 28
4.2 राजपूतों की उत्पत्ति (Origin of Rajputas)..................... 28
4.3 राजपूत राज्य (Rajput Kingdoms)................................ 28
हिंदूशाही राजवंश (Hindushahi Dynasty)..................28
चौहान वंश (Chauhan Dynasty) 29
सोलंकी वंश (गुजरात का चालुक्य वंश) 29
परमार राजवंश (Paramar Dynasty)...........................29
चंदेल राजवंश (Chandell Dynasty)............................ 29
गहड़वाल राजवंश (Gahadwal Dynasty)...................29
बुंदेला राजवंश (Bundela Dynasty) 29
तोमर राजवंश (Tomar Dynasty)...............................30
4.4 अन्य राजपूत राज्य (Other Rajputs States) 30
4.5 राजपूतों की सीमाएँ (Limits of Rajputs) 30
4.6 राजपूतों का महत्त्व (Importance of Rajputs) 31

इकाई – II: सल्तनत काल

अध्याय 5

भारत में तुर्कों का आगमन (Advent of Turks in India)....... 34
5.1 परिचय (Introduction).. 34
5.2 गजनवी (Ghaznavids) 34
5.3 महमूद गजनवी (Mahmud of Ghazni)......................... 35
भारत पर आक्रमण (Indian Invasions)......................35
गजनी के युद्ध (Ghazni's Battles)............................35
सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण (Somnath Temple Raids)36
अल-बरूनी...37
फिरदौसी (Firdausi)..37
महमूद गजनवी का मूल्यांकन (Evaluation of Mahmud of Ghazni)..37
5.4 12वीं शताब्दी में परिवर्तन (Changes in 12th Century) . 38
5.5 मुहम्मद गोरी (Muhammad Ghori) 38
पंजाब और सिंध विजय (Punjab and Sind Conquests).............................38
तराइन का प्रथम युद्ध (First Battle of Tarain).............38
तराइन का द्वितीय युद्ध (Second Battle of Tarain)......38
मुहम्मद गोरी का मूल्यांकन (Evaluation of Muhammad Ghori)..39
5.6 गजनवी राजवंश: दिल्ली सल्तनत के गठन में भूमिका (Ghaznavi Dynasty: Role in Formation of Delhi Sultanate).. 39

अध्याय 6

8वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान प्रमुख घटनाक्रम (Major Developments During 8th to 15th Century)........... 41
6.1 परिचय (Introduction).. 41
6.2 धर्म (Religion)... 41
परिचय (Introduction)...41
बौद्ध धर्म का पतन (Decline of Buddhism)...............41
मंदिरों का महत्त्व (Importance of Temples).............41
धार्मिक आंदोलन (Religious Movements).................42
उत्तर भारत में तंत्रवाद (Tantrism in North India)........42
भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement) 42
दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement in South India)...................................42
भक्ति संतों की विशेषताएँ (Characteristics of Bhakti Saints) 42
वीर शैव आंदोलन (Vir Shaiva Movement)................43
अद्वैत दर्शन (Advaita Philosophy)...........................43
विशिष्टाद्वैत दर्शन (Vishishtadvaita Philosophy)...............................43
सूफीवाद का विकास (Growth of Sufism) 43
6.3 अर्थव्यवस्था (Economy).. 44
6.4 व्यापार और वाणिज्य (Trade and Commerce)............. 44
6.5 समाज (Society).. 45
परिचय (Introduction)...45
सामाजिक विभाजन (Social Divisions) 45
जाति प्रथा (Cast System) 45
महिलाओं की स्थिति (Condition of Women)............45
6.6 शिक्षा की स्थिति (State of Education)......................... 46
विज्ञान के पतन के कारण (Reasons for Decline in Science) 46
6.7 बारहवीं शताब्दी के बाद की भक्ति (Bhakti Post 12th Century) 46
गुरु नानक (Guru Nanak) 46
एकेश्वरवाद (Monotheism) 47
वैष्णववाद (Vaishnavism)...47
असम...48
8वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान प्रमुख घटनाक्रम: महत्त्वपूर्ण तथ्य (Major Developments During 8th to 15th Century: Important Facts).................50

अध्याय 7

दिल्ली सल्तनत 12वीं से 14वीं शताब्दी
(Delhi Sultanate 12th to 14th Century)..............................53
7.1 उत्तर-पश्चिम से आक्रमण (Invasions from North-West) 53
अरब आक्रमण (Arab Invasion) 53
सिंध में अरब शासन का प्रभाव
(Impact of Arab Rule in Sindh)............................53
7.2 मामलूक सुल्तान (1206-90 ईस्वी)
[Mamluk Sultans (1206-90 AD)] 53
परिचय (Introduction)...53
कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10 ईस्वी)
[Qutb-ud-din Aibak (1206-10 AD)] 54
आरामशाह (1210-1211 ईस्वी)
[Aram Shah (1210-1211 AD)]..............................54
शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211-36 ईस्वी) 54
रजिया सुल्तान (1236-40 ईस्वी)................................55
नासिरुद्दीन महमूद (1246-66 ईस्वी) 55
गयासुद्दीन बलबन (1266-87 ईस्वी)............................55
बलबन का राजत्व सिद्धांत
(Theory of Kingship of Balban)..............................56
सिजदा और पैबोस (Sijada and Paibos)...................56
प्रशासन (Adminstration) 56
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) 56
राजवंश का महत्त्व (Importance of Dynasty) 57
7.3 खिलज़ी, (1290-1320 ईस्वी)
[Khaljis (1290-1320 AD)] 57
परिचय (Introduction)...57
जलालुद्दीन खिलज़ी (1290-96 ईस्वी) 57
अलाउद्दीन खिलज़ी (1296-1316 ईस्वी) 57
सल्तनत का विस्तार (Sultanate's Expansion)............58
प्रशासनिक व्यवस्था (Administrative System)............58
खिलज़ी के बाजार संबंधी सुधार (Market
Reforms of Khalji Dynasty)..................................58
सैन्य सुधार (Military Reforms) 59
राजस्व सुधार (Revenue Reforms)...........................59
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) 59
7.4 तुग़लक़ (1320-1412 ईस्वी) [Tughlaqs (1320-
1412 AD)] 60
परिचय (Introduction)...60
गियासुद्दीन तुग़लक़ (1320-25 ईस्वी)
[Ghiyas-ud-din Tughlaq (1320-25 AD)]...............60
मुहम्मद-बिन-तुग़लक़ (1325-51 ईस्वी)
[Muhammad Bin Tughlaq (1325-51 AD)] 60
सुधार (Reforms)..60
फिरोज़शाह तुग़लक़ (1351-88 ईस्वी) 61
तुग़लक़ प्रशासन (Tughlaq Administration)...............62
तुग़लक़ कला और वास्तुकला
(Tughlaq Art and Architecture) 62
राजवंश का महत्त्व (Importance of Dynasty) 63
7.5 सैय्यद वंश (1414-51 ईस्वी) 63
परिचय (Introduction)...63
7.6 लोदी वंश (1451-1526 ईस्वी)..................................63
परिचय (Introduction)...63
बहलोल लोदी (1451-1489 ईस्वी) 64
सिकंदर लोदी (1489-1517 ईस्वी).............................64
इब्राहिम लोदी (1517-1526 ईस्वी)
[Ibrahim Lodi (1517-1526)] 64
प्रशासन (Adminstration) 64
साहित्य (Literature)..65
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) 65
7.7 दिल्ली सल्तनत: चुनौतियाँ
(Delhi Sultanate: Challenges).................................. 65
अमीरों के बीच आंतरिक संघर्ष
(Inner Conflict among Nobility) 65
मंगोल एवं अन्य आक्रमण
(Mongols and other Invasions) 66
भारतीय सरदारों का विरोध
(Resistance by Indian Chiefs).............................66
प्रांतीय राज्यों का उदय
(Emergence of Provincial Kingdoms).................66

अध्याय 8

क्षेत्रीय राजवंश (Regional Dynasties)................................ 71
8.1 परिचय (Introduction).. 71
8.2 कश्मीर (Kashmir).. 71
8.3 जौनपुर (Jaunpur) 72
8.4 बंगाल (Bengal) 73
8.5 मालवा (Malwa) 73
8.6 मेवाड़ (Mewar).. 74
राणा सांगा...75
8.7 गुजरात (Gujrat)... 75
8.8 विजयनगर साम्राज्य (Vijayanagara Empire) 76
परिचय (Introduction)...76
आधार (Foundation)...76
प्रमुख शासक (Important Rulers).............................76
राजव्यवस्था एवं प्रशासन (Polity and Administration) 78
अर्थव्यवस्था (Economy)...78
समाज (Society)..78
धर्म (Religion)...78
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) 78

साहित्य (Literature) ... 79
पतन के कारण (Reasons for Decline) ... 80
निष्कर्ष (Conclusion) ... 80
8.9 बहमनी साम्राज्य (1347 – 1527 ईस्वी) (Bahmani Kingdom) ... 80
परिचय (Introduction) ... 80
महमूद गवाँ (1463–1482) (Mahmud Gawan) ... 80
राजव्यवस्था एवं प्रशासन (Polity and Administration) 81
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) ... 81
निष्कर्ष (Conclusion) ... 82
8.10 पुर्तगालियों का आगमन (Advent of Portuguese) ... 82
परिचय (Introduction) ... 82
वास्को डी गामा (Vasco Da Gama) ... 82
हिंद महासागर में प्रभुत्व (Supremacy in Indian Ocean) ... 82
व्यापार, समाज और राजनीति पर प्रभाव (Impact on Trade, Society - Politics) ... 83

इकाई – III: मुग़ल काल

अध्याय 9

उत्तर भारत के लिए संघर्ष (1525–55 ईस्वी) ... 88
Struggle For North India (1525-55 AD) ... 88
9.1 मुग़ल (Mughals) ... 88
9.2 बाबर (Babur) ... 88
भारत की विजय (Conquest of India) ... 88
युद्ध (Battles) ... 89
भारत में बाबर के सामने चुनौतियाँ (Challenges Faced by Babur in India) ... 91
बाबर के आगमन का महत्त्व (Significance of Babur's Advent) ... 91
9.3 हुमायूँ (Humayun) ... 92
परिचय (Introduction) ... 92
अफगानों की वापसी और उत्थान (Retreat and Rise of the Afghans) ... 93
हुमायूँ का उत्तरवर्ती जीवन (Humayun's Later Life) ... 93
9.4 सूर वंश (Sur Dynasty) ... 94
परिचय (Introduction) ... 94
शेरशाह सूरी (Sher Shah Suri) ... 94
राजव्यवस्था (Polity) ... 94
संघर्ष: हुमायूँ और शेरशाह (Encounters: Humayun and Sher Shah) ... 94
प्रशासन (Administration) ... 95
धर्म (Religion) ... 96
अर्थव्यवस्था (Economy) ... 96
कला और वास्तुकला (Art and Architecture) ... 96
राजवंश का महत्त्व (Importance of Dynasty) ... 96
पतन के कारण (Reasons for Decline) ... 97
उत्तर भारत के लिए संघर्ष (1525–55 ईस्वी): महत्त्वपूर्ण तथ्य (Struggle for North India (1525-55 AD): Important Facts) ... 97

अध्याय 10

मुगल साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण ... 100
Consolidation of Mughal Empire ... 100
10.1 परिचय (Introduction) ... 100
10.2 अकबर (Akbar) ... 100
परिचय (Introduction) ... 100
प्रतिस्पर्धा (Contests) ... 100
साम्राज्य का विस्तार (1560–76 ईस्वी) [Expansion of Empire (1560-76 AD)] ... 102
गढ़-कटंगा (Garh-Katanga) ... 102
प्रशासन (Administration) ... 104
राजनीतिक प्रशासन (Political Administration) ... 106
राजपूतों से संबंध (Relations with Rajputs) ... 106
धर्म (Religion) ... 107
मूल्यांकन (Evaluation) ... 108
10.3 जहाँगीर ... 108
परिचय (Introduction) ... 108
प्रारंभिक चुनौतियाँ (Initial Challenges) ... 109
विजय और अभियान (Conquests and Campaigns) ... 109
नूरजहाँ ... 110
धर्म (Religion) ... 110
यूरोपीय लोगों से संबंध (Relation with Europeans) ... 110
जहाँगीर के शासनकाल का मूल्यांकन (Evaluation of Jahangir*s Reign) ... 110
10.4 शाहजहाँ ... 111
परिचय (Introduction) ... 111
विजय (Conquests) ... 111
धार्मिक नीति (Religious Policy) ... 112
यूरोपीय व्यापारियों के साथ संबंध (Relation with European Traders) ... 112
उत्तराधिकार का युद्ध (War of Succession) ... 113
शाहजहाँ के शासनकाल का मूल्यांकन (Evaluation of Shah Jahan's Reign) ... 113
10.5 औरंगजेब ... 113
परिचय (Introduction) ... 113
उत्तरी चरण (1658–81 ईस्वी) [Northern Phase (1658981 AD)] ... 114

लोकप्रिय विद्रोह (Popular Revolts) 114
राजपूत नीति (Rajput Policy)...................................115
दक्कन चरण (1681 – 1707 ईस्वी)
[Deccan Phase (1681 – 1707 AD)]...................115
प्रशासन (Administration) 117
धार्मिक नीति (Religious Policy) 118
औरंगजेब के शासनकाल का मूल्यांकन
(Evaluation of Aurangzeb*s Reign) 118
10.6 विश्लेषण (Analysis)... 118
मुगल साम्राज्य के पतन के कारण
(Causes of Decline of Mughal Empire) 118
मुगल शासन का प्रभाव
(Impact of the Mughal Rule)..............................119

अध्याय 11

दक्कन राज्य.. 126
Deccan States.. 126
11.1 परिचय (Introduction)... 126
11.2 दक्कन 1595 ईस्वी तक (Deccan up to 1595)........... 126
विजयनगर का विघटन
(Disintegration of Vijaynagara) 126
आपसी संघर्ष (Mutual Conflicts) 126
नृजातीय संघर्ष और सांप्रदायिक हिंसा
(Ethnic Strife and Sectarian Violence)...............127
महदवी संप्रदाय का उदय (Rise of Mahdawism).......127
मराठों का बढ़ता प्रभाव
(Increasing Influence of Marathas)...................127
पुर्तगालियों की बढ़ती शक्ति
(Growing Power of Portuguese)........................128
11.3 मुगलों का दक्कन की ओर आगे बढ़ना
(Mughal Advance towards Deccan)...................... 128
11.4 बरार, खानदेश और अहमदनगर के कुछ हिस्सों पर विजय (Conquest of Berar, Khandesh and Parts of Ahmednagar)... 128
अकबर के राजनयिक मिशनों की विफलता
(Failure of Akbar*s Diplomatic Missions) 128
अहमदनगर के शासक की मृत्यु
(Death of Ruler of Ahmednagar).......................129
चाँद बीबी द्वारा प्रतिरोध
(Resistance by Chand Bibi) 129
अहमदनगर की दूसरी घेराबंदी
(Second siege of Ahmednagar)........................130
खानदेश की विजय (Conquest of Khandesh).........130
मुर्तजा द्वितीय के साथ समझौता
(Agreement with Murtaza II)..............................131
बीजापुर से मित्रता की कोशिश
(Attempt to befriend Bijapur) 131
11.5 मलिक का उदय (Rise of Malik) 131
मराठों और बीजापुर की सहायता
(Help of Marathas and Bijapur).........................131
मुगलों द्वारा क्षेत्रों की हानि
(Loss of Territories by Mughals) 132
आमेर के विरुद्ध मुगल और मराठा
(Mughals and Marathas Against Ambar) 132
जहाँगीर की गैर-विस्तारवादी नीति
(Non&Eñpansionist Policy of Jahangir).............132
सत्ता पर दोबारा कब्जा करने में मलिक अंबर के असफल प्रयास (Failed Efforts of Malik Ambar to Recapture Power)..133
भटवाड़ी का युद्ध (1624)
[Battle of Bhatvadi (1624)] 133
मलिक अंबर का मूल्यांकन
(Assessment of Malik Ambar) 134
11.6 मुगल आधिपत्य (Mughal Suzerainty) 134
शाहजहाँ का शासनकाल (Reign of Shahjahan)........134
मुगल नीति में परिवर्तन (Change in Mughal Policy) 134
अहमदनगर पर कब्जा करने का प्रयास
(Efforts to Capture Ahmednagar) 134
बीजापुर और अहमदनगर के बीच समझौता
(Agreement between Bijapur and Ahmednagar) 135
फतह खान को पुरस्कार और शाहजी भोंसले द्वारा दल-बदल (Reward for Fath Khan and Defection by Shahji Bhosle)..............................135
गलों के लिए कठिन समय
(Difficult Times for Mughals) 135
शाहजहाँ द्वारा बीजापुर पर आक्रमण
(Invasion of Bijapur by Shah Jahan).................136
अहदनामा की संधि (Treaty of Ahdanama) 136
गोलकुंडा के साथ संधि (Treaty with Golconda)......136
इन संधियों का प्रभाव (Effect of these Treaties) 136
11.7 शाहजहाँ और दक्कन (1636–57 ईस्वी)
[Shah Jahan and the Deccan (1636-57 AD)] 136
11.8 दक्कन राज्यों का सांस्कृतिक योगदान
(Cultural Contributions of Deccan States)............. 137
उर्दू और अन्य भाषाएँ (Urdu and other Languages)138
चित्रकला (Painting)...138
वास्तुकला (Architecture).......................................139

अध्याय 12

मुगल प्रशासन.. 141
Mughal Administration 141
12.1 केंद्रीय प्रशासन (Central Administration)................... 141
परिचय (Introduction)..141
सम्राट (Emperor) 141

वजीर (Wazir) 141
दीवान-ए-कुल 143
मीर बख्शी (Mir Bakshi) 143
मीर समन (Mir Saman) 143
सद्र-उस-सुदूर (Sadr-us Sudur) 143
प्रमुख काजी (Chief Qazi) 143
12.2 प्रांतीय प्रशासन (Provincial Administration) 143
परिचय (Introduction) 143
प्रांतीय गवर्नर/सूबेदार (Provincial Governor) 143
दीवान (Diwan) 144
बख्शी (Bakshi) 144
दरोगा-ए-डाक (Daroga-i-Dak) 144
खुफिया/गुप्त सेवाएँ (Secret Services) 144
12.3 स्थानीय प्रशासन (Local Administration) 144
सरकार (Sarkar) 144
परगना प्रशासन (Pargana Administration) 144
कोतवाल (Kotwal) 144
किलादार (Qiladar) 144
12.4 सैन्य व्यवस्था (Military System) 144
परिचय (Introduction) 144
मनसबदारी व्यवस्था (Mansabdari System) 145
जागीरदारी प्रथा (Jagirdari System) 146
12.5 आर्थिक प्रशासन (Economic Administration) 146
परिचय (Introduction) 146
भू-राजस्व (Land Revenue) 147
भू-राजस्व के अलावा अन्य कर (Taxes other than Land Revenue) 148
मुद्रा प्रणाली (Currency System) 149
12.6 न्यायपालिका (Judiciary) 150
12.7 उत्तराधिकार की नीति (Policy of Succession) 150
12.8 अन्य भारतीय राज्यों के साथ संबंध (Relations with other Indian States) 151
परिचय (Introduction) 151
राजपूत (Rajputs) 152
दक्कन और दक्षिण भारतीय राज्य (Deccan and South Indian States) 153
सिक्ख (Sikhs) 154
जाट (Jats) 155
उत्तर-पूर्वी राज्य (North Eastern Kingdoms) 155

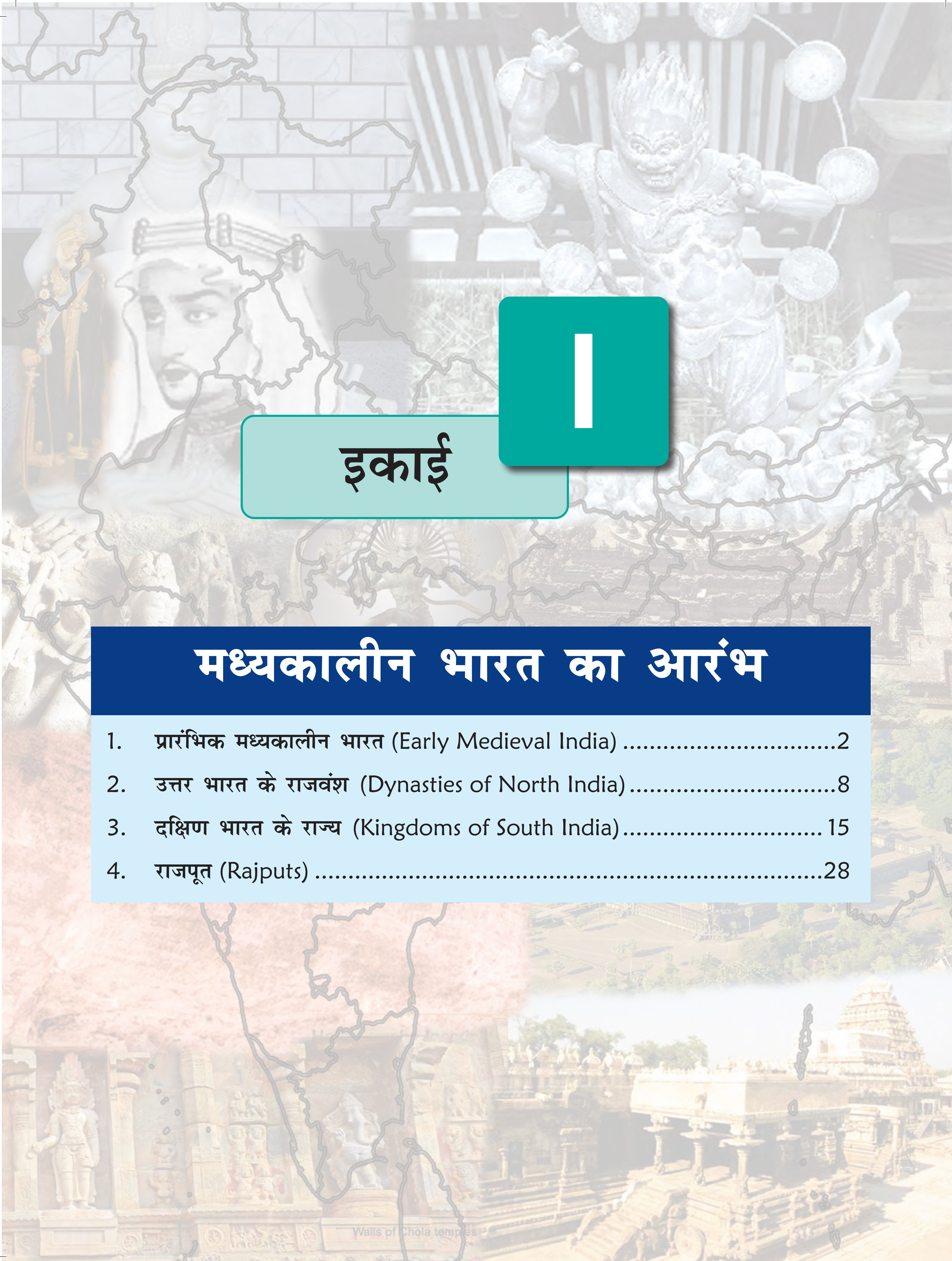

इकाई I

मध्यकालीन भारत का आरंभ

1. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत (Early Medieval India) 2
2. उत्तर भारत के राजवंश (Dynasties of North India)...............................8
3. दक्षिण भारत के राज्य (Kingdoms of South India).............................. 15
4. राजपूत (Rajputs) 28

अध्याय 1

प्रारंभिक मध्यकालीन भारत
(Early Medieval India)

1.1 सामंतवाद (Feudalism)

सामंतवाद मध्यकालीन यूरोप में कानूनी और सैन्य प्रणालियों का एक मिश्रित रूप था, जो 9वीं और 15वीं शताब्दी ईस्वी के बीच व्यापक स्तर पर विकसित हुआ था। यह एक ऐसी प्रणाली थी, जिसमें राजा अभिजातों (Nobles) को भूमि देते थे। बाद में फिर यह भूमि अभिजात अपने जागीरदारों (राजभक्ति और निष्ठा की शर्तों पर भूमि के धारक) की माँग पर उन्हें सैन्य और अन्य सेवाओं के बदले में दे देते थे।

भारतीय उपमहाद्वीप में प्रारंभिक मध्य काल में एक समान प्रणाली विकसित हुई, जिसके तहत अक्षम और कमज़ोर राजा मुद्रा में भुगतान करने के बजाय भूमि अनुदान के माध्यम से मुआवज़ा (Compensation) देते थे। भारतीय सामंतवाद की प्रकृति यूरोपीय सामंतवाद की प्रकृति से काफ़ी अलग थी, जिसे इतिहासकार भी पूरी तरह से अलग व्यवस्था के रूप में देखते हैं।

भारत में सामंतवाद (Feudalism in India)

भारत में सामंतवाद का आरंभ प्रारंभिक मध्य काल के आगमन के साथ हुआ, जब गुप्त काल के अंत के दौरान शहरी केंद्रों और वाणिज्यिक गतिविधियों में गिरावट के कारण गाँव आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो गए थे। पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान राजाओं ने ब्राह्मणों (जिन्हें ब्रह्मादेय कहा जाता है), विद्वानों और अन्य धार्मिक संस्थानों को मुफ्त में भूमि दान करना प्रारंभ किया था। इस प्रकार, भूमि का स्वामित्व प्रदान किया गया और राजस्व एकत्र करने का अधिकार दिया गया। ब्राह्मणों को भूमि अनुदान देने की प्रथा एक ऐसी प्रथा थी, जिसे धर्मशास्त्रों, महाकाव्यों और पुराणों में निर्धारित आदेशों द्वारा अनुमति दी गई थी। महाभारत के अनुशासन पर्व में भूमिदान (भूमिदान प्रशंसा) प्रथा की प्रशंसा और गुणगान के लिए एक पूरा अध्याय समर्पित है। भूमि अनुदान के बदले में राजाओं को किसानों से संबंध बनाने और उन पर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखने में मदद मिली।

अभिलेख अंकन

ब्रह्मादेय

भूमि की उपज पर कर इकट्ठा करने, स्थानीय संसाधनों पर नियंत्रण रखने और गाँवों के प्रबंधन के अधिकार के साथ प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में राजाओं द्वारा ब्राह्मणों या ब्राह्मणों के समूह को उपहार के रूप में कर मुक्त गाँव दिये गए थे।

सामंतवाद के विकास के साथ, भूमि पर सामुदायिक अधिकार कम हो गया था। चारागाह-भूमि (Pasture-lands), कच्छ-भूमि (Marshes) और जंगल राजा द्वारा उपहार के रूप में दिए जाते थे। इस प्रकार, एक मध्यवर्गीय भूमिधारकों/भू-स्वामियों (Land Owner) का उदय हुआ तथा किसानों ने अपने भूमि अधिकार खो दिए। उन्हें बड़े कर चुकाने और बेगार करने के लिए विवश किया गया। उनकी स्थिति दासों के स्तर तक सीमित कर दी गई। भविष्य में भी ज़मीन के हस्तांतरण (Transfer) की संभावना थी और वास्तव में ऐसा हुआ भी।

राजस्व अधिकारों के हस्तांतरण के साथ-साथ, इस प्रणाली के परिणामस्वरूप विशेष रूप से ब्राह्मणों को प्रशासनिक अधिकार भी हस्तांतरित हो गए। इसके परिणामस्वरूप ब्राह्मण सामंतों को बढ़ावा मिला। इसके अलावा, राजस्व और प्रशासनिक शक्तियों के समाप्त होने से राज्य का विघटन हुआ और राजा की शक्ति कमज़ोर हो गई। भारतीय सामंतवाद की विशेषताओं को संक्षेप में निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:

- **राजनीतिक विकेंद्रीकरण (Political Decentralization):** भूमि अनुदान के रूप में प्राप्त विकेंद्रीकरण धीरे-धीरे सामंतों, महासामंतों आदि जैसे अर्ध-स्वायत्त शासकों से बनी एक विशिष्ट शाखा वाले राजनीतिक संगठन में बदल गया।
- **नए वर्ग का उद्भव (Emergence of New Class):** सामंतवाद के परिणामस्वरूप भूमिधारकों के मध्यवर्ग का उदय हुआ, जो एक प्रमुख सामाजिक समूह बन गया। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में यह वर्ग नहीं था और भूमि अनुदान की प्रथा से जुड़ा था, जो सातवाहनों के समय में आरंभ हुई थी।
- **कृषि संरचना में परिवर्तन (Changes in Agrarian Structure):** सामंतवाद की प्रगति के साथ छठी शताब्दी ईस्वी के बाद से किसान लाभार्थियों को दी गई भूमि पर ही आश्रित रहे। इससे लोगों की गतिशीलता अवरुद्ध हो गई, जिसके परिणामस्वरूप उनके और शेष विश्व के बीच दूरियाँ बढ़ गईं। इसका बड़ा निहितार्थ स्थानीय रीति-रिवाज़ों, भाषाओं और रीति-रिवाज़ों के विकास में था।

भूमि अनुदान में परिवर्तन (Changes in Land Grant)

उत्तरवर्ती मौर्य काल से भूमि अनुदान में राजस्व के सभी स्रोतों का हस्तांतरण और पुलिस एवं प्रशासनिक कार्यों को सौंपना भी शामिल था। दूसरी शताब्दी ईस्वी के अनुदानों में राजा के नियंत्रण को केवल नमक पर हस्तांतरित करने का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ है कि उसने राजस्व के कुछ अन्य स्रोतों को बनाए रखा था, जबकि ऐसा नहीं था। कुछ अन्य अनुदानों में यह भी उल्लिखित है कि दाता (राजा) ने राजस्व के लगभग सभी स्रोतों पर अपना नियंत्रण छोड़ दिया था, जिसमें चारागाह, खदानें, छिपे हुए खजाने और भंडार शामिल थे।

बाद के काल में दानकर्ता ने न केवल अपना राजस्व छोड़ दिया था, बल्कि अनुदान में दिये गए गाँवों के शासन का अधिकार भी छोड़ दिया था। गुप्तकाल में यह प्रथा अधिक प्रचलित हो गई थी। गुप्त काल के दौरान ब्राह्मणों के स्पष्ट रूप से बसे हुए गाँवों के अनुदानों के कई उदाहरण हैं। ऐसे अनुदानों में कृषकों और कारीगरों सहित निवासियों को उनके संबंधित शासकों/राजाओं द्वारा स्पष्ट रूप से कहा गया था कि वे न केवल दान प्राप्तकर्ताओं को पारंपरिक कर का भुगतान करें, बल्कि उनकी आज्ञाओं का पालन भी करें। यह राज्य की प्रशासनिक शक्ति के हस्तांतरण का स्पष्ट प्रमाण है।

राजा की संप्रभुता का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह था कि वह अपराधियों को दंड देने का अधिकार अपने पास रखता था। गुप्तोत्तर काल में राजा ने न केवल यह अधिकार, बल्कि परिवार, संपत्ति, व्यक्ति आदि के विरुद्ध सभी अपराधों को दंडित करने का अधिकार भी ब्राह्मणों को सौंप दिया था।

1.2 भारत और विश्व संबंध (India and World Relations)

अरब (Arab)

अरब विश्व के प्राथमिक जनसंख्या समूहों में से एक है। अरबों का प्राथमिक निवास पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफ़्रीका, हॉर्न ऑफ अफ्रीका और पश्चिमी हिंद महासागर द्वीपों में विस्तारित अरब संसार में है। इस्लाम-पूर्व काल से ही अरबों के भारतीयों के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध रहे थे। भारतीयों और अरबों के बीच अरब सागर के रास्ते व्यापार होता था।

मसाले और अन्य विदेशी उष्णकटिबंधीय उत्पाद भारत और अरब संसार के बीच व्यापार और वाणिज्य का मुख्य आधार थे। अरब संसार से आयात में कॉफी, घोड़े और अन्य भूमध्यसागरीय उत्पाद (Mediterranean Products) शामिल थे। इसलिए व्यापार को सुरक्षित करने के उद्देश्य से अरब व्यापारियों ने भारत के पश्चिमी तट पर अपनी स्थायी बस्तियाँ बसाई थीं। इन बस्तियों ने भारत-अरब सांस्कृतिक संबंधों के आदान-प्रदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंद महासागर में व्यापार मार्ग

भारत के साथ अरब संपर्क (Arab Contact with India)

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, पूर्व में अरब यूरोपीय संसार में भारतीय माल/सामान भेजने के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करता था, लेकिन अरब संसार में इस्लाम के उदय के साथ अरबवासियों ने अपने आस-पास के क्षेत्रों में विस्तार करना आरंभ कर दिया था। सीरिया, फ़िलिस्तीन, मिस्र और फ़ारस पर विजय प्राप्त करने के बाद अरबों की निगाह भारत पर थी, जो उस समय संपन्न एवं समृद्ध क्षेत्र था।

आठवीं शताब्दी में भारत पर अरब आक्रमण के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी उपयुक्त थीं। हर्षवर्द्धन के निधन के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक वातावरण अत्यधिक अस्थिर था। देश के दक्षिणी भाग में व्यापारिक संबंधों के माध्यम से इस्लाम पहले ही भारत में अपने पैर जमा चुका था।

सिंध की स्थिति (Condition of Sindh)

राजा दाहिर

अरब आक्रमणों से बहुत पहले सिंध का क्षेत्र हिंदू और बौद्ध, दोनों के बीच सत्ता और वर्चस्व की लड़ाई का केंद्र बना था। 622 ई. तक सिंध बौद्ध राय राजवंश के अधीन था। राय के एक ब्राह्मण मंत्री ने सिंहासन पर अधिकार करके स्वयं को राजा घोषित कर लिया था। उसने राजधानी ब्राह्मणाबाद से शासन किया था। उसके शासनकाल में नागरिक असंतोष (Civil Unrest) की स्थिति थी, जो उसके बेटे दाहिर के शासनकाल में और भी बुरी हो गई थी। दाहिर ने ही 712 ई. में अरब आक्रमण का सामना किया था।

सिंध पर अरबों की विजय (Arab Conquest of Sindh)

8वीं सदी में अरब क्षेत्र पर सीरिया के इस्लामी खलीफा का शासन था। खलीफा के एक सेनापति मुहम्मद बिन कासिम को खलीफा-अल-वालिद प्रथम ने भारत को जीतने के लिए भेजा था। अरब के कट्टर मुस्लिम शासकों का मुख्य उद्देश्य इस्लाम को मज़बूत करना और इस्लाम को स्वीकार करने वालों को दंडित करना था।

मुहम्मद बिन कासिम

उसने एक प्राचीन बंदरगाह शहर देबल (आधुनिक कराची के पास) पर हमला किया और राजा दाहिर के भतीजे को हराया, जो बंदरगाह शहर का प्रभारी था। शहर की संपत्ति लूट ली गई थी और जिन लोगों ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था, उन्हें निर्दयता से मार दिया गया था। देबल के बाद कासिम ने सिंधु नदी पार की और राजा दाहिर से युद्ध किया। दाहिर ने बलपूर्वक युद्ध लड़ा, लेकिन अरोर के युद्ध (712) में हार गया और मारा गया। ब्राह्मणाबाद से बड़ी संपत्ति लूटी गई और इस तरह, सिंध के हिंदू साम्राज्य का अंत हो गया।

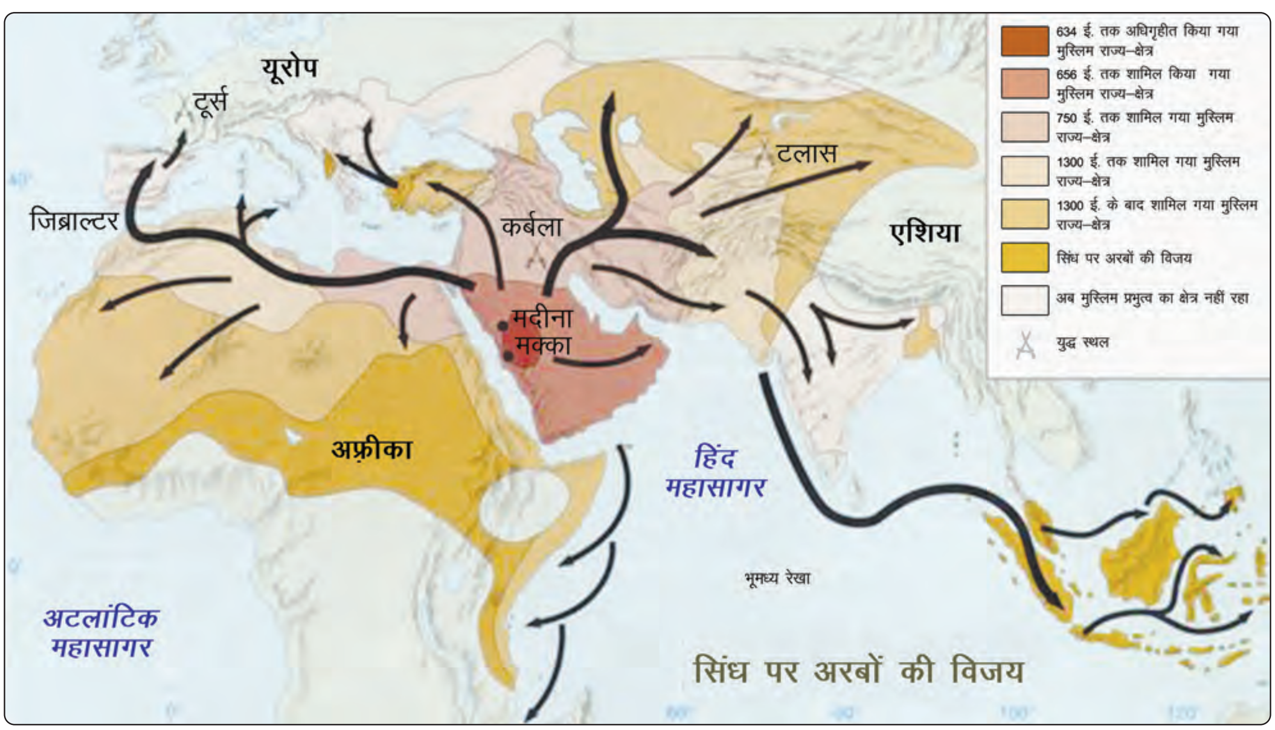

सिंध पर अरबों की विजय

विजय का महत्त्व (Significance of Conquest)

- सिंध विजय के बाद सिंध और मुल्तान क्षेत्र में इस्लाम की स्थापना हुई, हालाँकि मज़बूत राजपूत शासकों के कारण अरबों का प्रभाव पूर्व और उत्तर तक नहीं पहुँच सका। यह भारत में इस्लामी आक्रमण का पहला उदाहरण था।
- इससे दो अलग-अलग संस्कृतियों के बीच परस्पर आदान-प्रदान हुआ तथा इंडो-इस्लामिक संस्कृति का विकास हुआ। सिंध सूफीवाद का जन्म स्थल था, जिससे मध्य युग में भक्ति पंथ का उद्भव हुआ।
- सिंध प्रांत पहले एक रेगिस्तान था, जहाँ व्यापारिक और वाणिज्यिक गतिविधियाँ नाममात्र की थीं। अरब नियंत्रण के परिणामस्वरूप ऊँटों और घोड़ों का आगमन हुआ, जिनका उपयोग व्यापार के लिए किया जाने लगा। अरबों के निवेश से इस क्षेत्र में विकास और समृद्धि आई।
- दशमलव प्रणाली 5वीं शताब्दी में भारत में विकसित हुई थी, जो इस अवधि में अरब संसार में पहुँची और बाद में अरबी अंक प्रणाली के रूप में जानी जाने लगी।
- खगोल विज्ञान और गणित से संबंधित कई भारतीय रचनाओं का अरबी भाषा में भी अनुवाद किया गया। खगोल विज्ञान पर प्रसिद्ध रचना 'सूर्य-सिद्धांत' इनमें से एक थी। औषधियों से संबंधित 'चरक' और 'सुश्रुत' की रचनाओं का भी अनुवाद किया गया। कलिला वा-दिमना या पंचतंत्र जैसी कई संस्कृत साहित्यिक कृतियों का अरबी में अनुवाद हुआ, जो पश्चिम में ईसप की दंतकथाओं (Aesop's Fables) का आधार बना।

अफ़्रीका (Africa)

भारतीय उपमहाद्वीप और अफ्रीका, हिंद महासागर द्वारा एक-दूसरे से अलग होते हैं। अफ़्रीकी के पूर्वी तट और भारतीय उपमहाद्वीप के बीच भौगोलिक निकटता ने प्राचीन काल से संबंधों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय व्यापारी अफ़्रीका से सोने और मुलायम नक्काशीदार हाथीदाँत के बदले में कपास, काँच के मोतियों और अन्य वस्तुओं का व्यापार करते थे। प्राचीन अफ़्रीका साम्राज्यों में भारतीय कला और वास्तुकला के महत्त्व से दोनों सभ्यताओं के बीच व्यापारिक विकास के स्तर का पता चलता है। धीरे-धीरे हिंद महासागर क्षेत्र में व्यापारिक मार्ग निर्मित हो गए और अफ़्रीकी बंदरगाह भारतीय और यूरोपीय वस्तुओं/सामानों के आदान-प्रदान का बड़ा माध्यम बन गए थे।

पूर्वी एशिया (East Asia)

भारत और चीन (India and China)

पहली शताब्दी के बाद से कई भारतीय और चीनी विद्वानों तथा भिक्षुओं ने दोनों देशों के बीच यात्रा की। चीन के दो सबसे प्रसिद्ध यात्री थे- फा-जियान (फाह्यान), जो एक बौद्ध भिक्षु था, ने 5वीं शताब्दी ईस्वी में गुप्तकाल में यात्रा की थी और ह्वेनसांग, जिसने हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत में लगभग 17 साल व्यतीत किए थे।

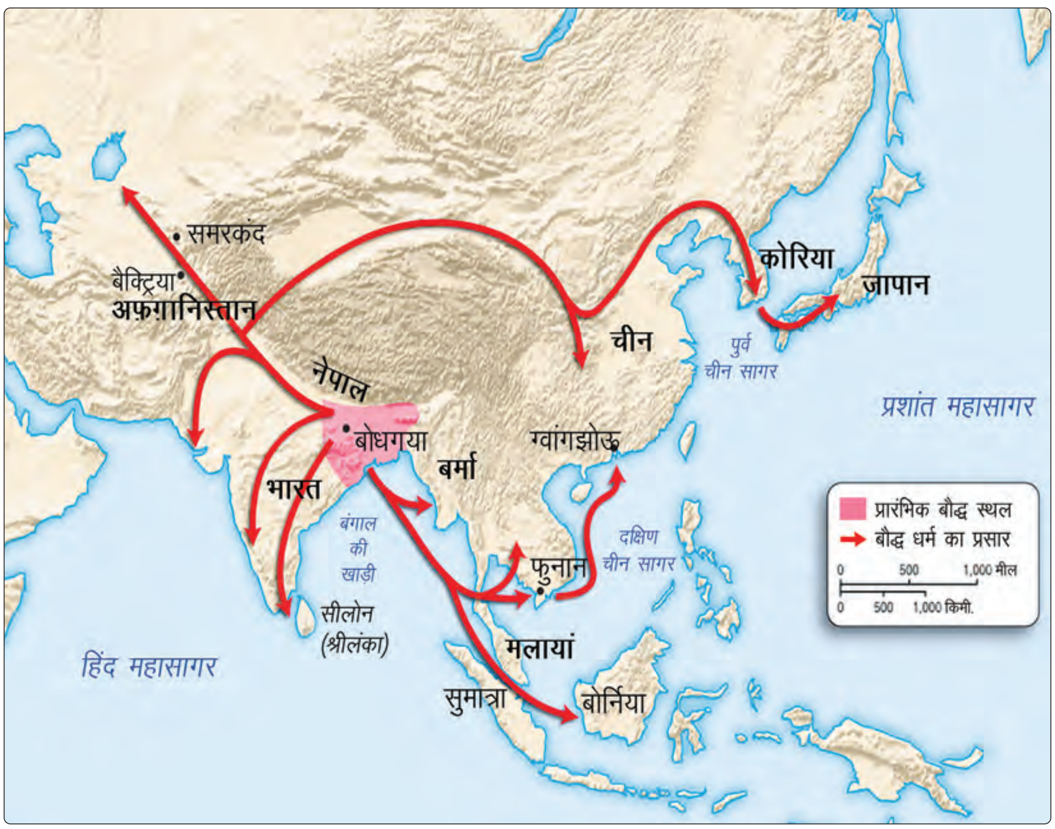

बौद्ध धर्म का प्रसार

प्रारंभिक मध्यकालीन काल में भारत से चीन में बौद्ध धर्म का प्रसार दोनों देशों के बीच संपर्क का केंद्र-बिंदु था। तांत्रिक बौद्ध धर्म, जिसे वज्रयान शाखा के रूप में भी जाना जाता है, चीन में सबसे लोकप्रिय था। यह वर्तमान में भी तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में प्रचलित है। बौद्ध धर्म के साथ-साथ भारतीय वास्तुकला; जैसे- पैगोड़ा और सैन्य कला भी चीनी संस्कृति में घुल-मिल गए थे।

चोलों के दक्षिणी साम्राज्य ने भी चीनी शासकों के साथ अच्छे संबंध बना रखे थे। इसका प्रमाण चोलों की मातृभूमि (अर्थात् वर्तमान तमिलनाडु के तंजावुर, तिरुवरूर और पुदुक्कोट्टई जिलों) में बड़ी संख्या में पाये गए प्राचीन चीनी सिक्कों से मिलता है। राजराज चोल और उसके पुत्र राजेंद्र चोल के शासनकाल में चोलों ने चीन के सोंग राजवंश के साथ अच्छे व्यापारिक संबंध स्थापित किए थे। चोल नौसेना ने इंडोनेशिया और मलेशिया के श्री विजय साम्राज्य पर विजय प्राप्त की थी, जिससे चीन के लिए एक समुद्री व्यापार मार्ग खुल गया था।

भारत और जापान (India and Japan)

चीन की तरह भारत और जापान के बीच प्राचीन संबंधों में बौद्ध धर्म ने उपयोगी भूमिका निभाई है। यह अभी भी जापान के प्रमुख धर्मों में से एक है। बौद्ध धर्म के साथ-साथ, भारतीय संस्कृति और धर्म की कई धाराएँ भी जापान में विस्तारित हुई हैं। जापानी धर्मशास्त्र में भारतीय देवी-देवताओं को अलग-अलग रूपों में शामिल किया गया है।

जापान के हिंदू देवता

भारत और जापान के बीच बौद्ध धर्म के संबंध ने यह सुनिश्चित किया कि भिक्षु और विद्वान अक्सर दोनों देशों के बीच यात्राओं पर जाते थे। भारत में नालंदा विश्वविद्यालय के प्राचीन अभिलेखों में जापान से आए विद्वानों और विद्यार्थियों के बारे में विवरण मिलता है। भारतीय उपमहाद्वीप का प्रसिद्ध जापानी यात्री तेनजिकु तोकुबेई था।

तेनजिकु तोकुबेई

भारत और कोरिया (India and Korea)

भारत और कोरिया के बीच ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। अन्य पूर्वी एशियाई देशों की तरह ही बौद्ध धर्म कोरिया और भारत के बीच भी संबंधों का आधार था। ऐसा माना जाता है कि बौद्ध धर्म कोरिया में चौथी शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध में पहुँचा था। माना जाता है कि बौद्ध धर्म भारत से चीन होते हुए कोरिया पहुँचा। आठवीं शताब्दी के बाद से विभिन्न कोरियाई भिक्षुओं ने भारत का दौरा किया।

ऐसी किंवदंतियाँ भी हैं कि एक कोरियाई राजकुमारी ने भारत के राजा से विवाह किया तथा इस तरह घनिष्ठ संबंध स्थापित किए। कोरियाई राजकुमारी की कब्र के अंदर खोजे गए 'डबल-फिश' पैटर्न (Double-fish Pattern) जैसे कुछ पुरातात्विक साक्ष्य हैं, जो उसी समय मध्य भारत में भी प्रचलित थे। इस तरह, किंवदंती की पुष्टि होती है।

दक्षिण-पूर्व एशिया (South-East Asia)

मध्य काल के दौरान श्रीलंका, मलेशिया और इंडोनेशिया के दक्षिण-पूर्वी द्वीप भारतीय प्रभाव में आ गए थे। चोल उन्नत नौसैनिक शक्ति के माध्यम से अपना विस्तार करने वाला पहला साम्राज्य था। यह विस्तार तीन प्रकार से हुआ:

- **सैन्य कारक (Millitary Factors):** चोल, पल्लव और पांड्य के दक्षिणी राज्य सैन्य रूप से दक्षिण-पूर्व एशियाई द्वीपों से बेहतर थे। किसी भी बाह्य ख़तरे को विफल करने और सुरक्षित व्यापार सुनिश्चित करने हेतु इन राज्यों के लिए इन द्वीपों पर नियंत्रण आवश्यक था।
- **व्यापारिक संबंध (Trade Relations):** बंदरगाहों और जहाज निर्माण उद्योग के विकास के कारण भारत और इन द्वीपों के बीच व्यापार कई गुना बढ़ गया था। दक्षिण-पूर्व एशियाई द्वीप अफ्रीका-भारत-चीन व्यापार मार्गों के लिए व्यापार चौकियों (Trade Outposts) के रूप में भी कार्य करते थे।
- **सांस्कृतिक प्रसार (Cultural Expansion):** व्यापारियों के साथ-साथ हिंदू और बौद्ध पुजारी व भिक्षु भी गए, जिन्होंने दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने धर्म और संस्कृति का प्रचार किया। यह इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रसार और कंबोडिया में अंकोरवाट जैसे विशाल-भव्य मंदिरों की उपस्थिति से स्पष्ट है। एक अन्य प्रसिद्ध मंदिर बोरोबुदुर का है, जो बुद्ध को समर्पित है।

रामायण और महाभारत जैसे भारतीय महाकाव्य साहित्य, लोक-कला, नाटकों आदि के लिए रुचिकर रहे हैं।

संबंधों का महत्त्व (Significance of Relations)

- यद्यपि, भारत में बौद्ध धर्म का पतन हुआ, तथापि यह दक्षिण-पूर्व एशिया में समृद्ध हुआ था।
- विभिन्न संस्कृतियों के सम्मिलन के परिणामस्वरूप क्षेत्र के लोगों के बीच ऐतिहासिक संबंध बने हैं, जो भारत द्वारा 'सॉफ्ट पावर' के उपयोग में सहायक है।

- इंडोनेशिया और थाईलैंड जैसे देशों में भारतीय मूल के शीर्ष नेता रहे हैं, जिन्होंने भारत को उसके स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ उसके वैश्विक एजेंडे में भी मदद की।
- दक्षिण-पूर्व एशिया एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक समूह (आसियान) के रूप में उभरा है और भारत आसियान का एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार है।

अंकोरवाट और बोरोबुदुर मंदिर

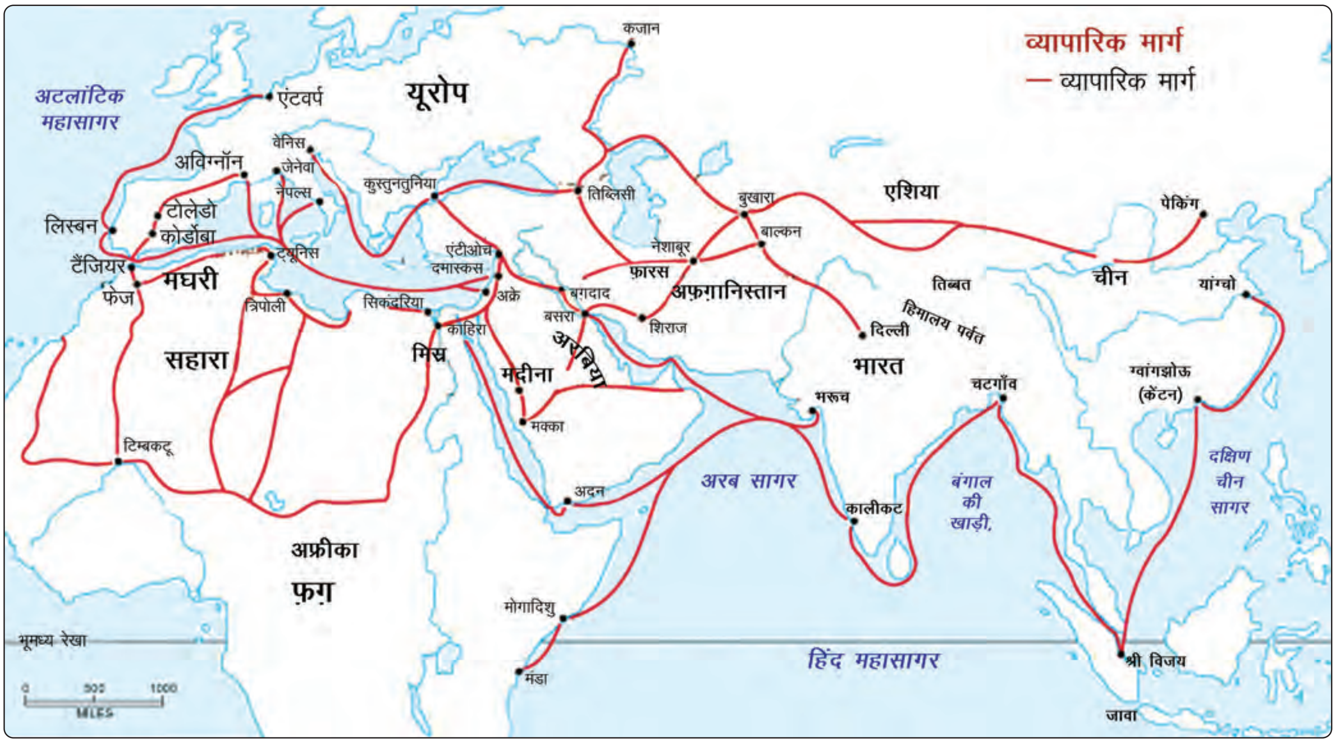

पूर्व मध्य काल का भारत: महत्त्वपूर्ण तथ्य
(Early Medieval India: Important Facts)

- 712 ई. में बसरा के गवर्नर अल-हज्जाज ने अपने भतीजे और दामाद मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में सिंध के शासक दाहिर के विरुद्ध एक अभियान का नेतृत्व किया। इस अभियान ने सिंध को अरबों के अधीन कर दिया था।
- इस अभियान का कारण न तो क्षेत्रीय विस्तार की इच्छा थी और न ही धार्मिक। श्रीलंका के राजा ने तुर्की के राजा को कुछ उपहार भेजे थे, जिन्हें सिंध के देबल में समुद्री लुटेरों ने लूट लिया। सिंध के शासक दाहिर ने इस घटना के प्रति अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हुए क्षति की भरपाई करने से मना कर दिया था। इससे अल-हज्जाज क्रोधित हो गया और उसने सिंध पर आक्रमण कर दिया।

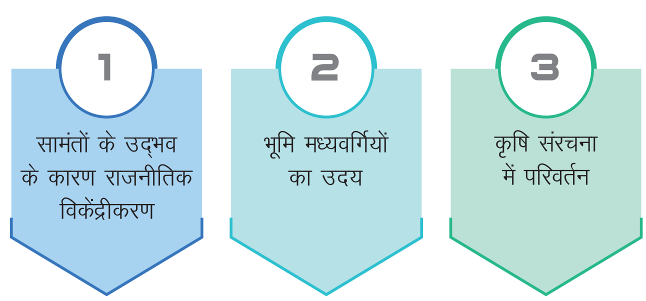

भारतीय सामंतवाद की विशेषताएँ

अध्याय
2

उत्तर भारत के राजवंश
(Dynasties of North India)

2.1 पाल (Palas)

परिचय (Introduction)

गौड़ राजा शशांक की मृत्यु के बाद बंगाल लगभग एक शताब्दी तक अराजकता और अव्यवस्था के दौर से गुज़रा। आंतरिक अव्यवस्था ने बंगाल को बाह्य आक्रमण के प्रति संवेदनशील बना दिया था। बंगाल में व्याप्त अराजकता को समाप्त करने के लिए गौड़ राज्य के प्रमुख सदस्यों ने एक सभा आयोजित की, जिसमें गोपाल को अपना राजा चुनने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार, गोपाल (जिसे गोपाल-I के नाम से भी जाना जाता है) लगभग 750 ई. में बंगाल के प्रसिद्ध पाल राजवंश का संस्थापक बना था।

राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र (Political Sphere of Influence)

धर्मपाल का साम्राज्य

धर्मपाल

धर्मपाल

धर्मपाल, गोपाल-प्रथम का उत्तराधिकारी बना और उसे पाल शासकों में सबसे योग्य शासक के रूप में जाना जाता था। वह सैन्य प्रबंधन में कुशल था और उसने कई राज्यों पर विजय प्राप्त की थी। उसने कन्नौज के शासक राजकुमार को भी सिंहासन से हटाकर, वहाँ अपना उम्मीदवार नियुक्त किया था। उसका लंबा एवं गौरवशाली शासनकाल लगभग 30 वर्षों तक चला था।

देवपाल भी अपने पिता की तरह एक शक्तिशाली शासक था। उसने हूणों और कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार राजा के विरुद्ध सफल लड़ाई लड़ी थी। उसके साम्राज्य में उत्तर में कंबोज से लेकर दक्षिण में विंध्य तक का विशाल क्षेत्र शामिल था। सुमात्रा के राजा ने भी उसके दरबार में एक राजदूत भेजा था।

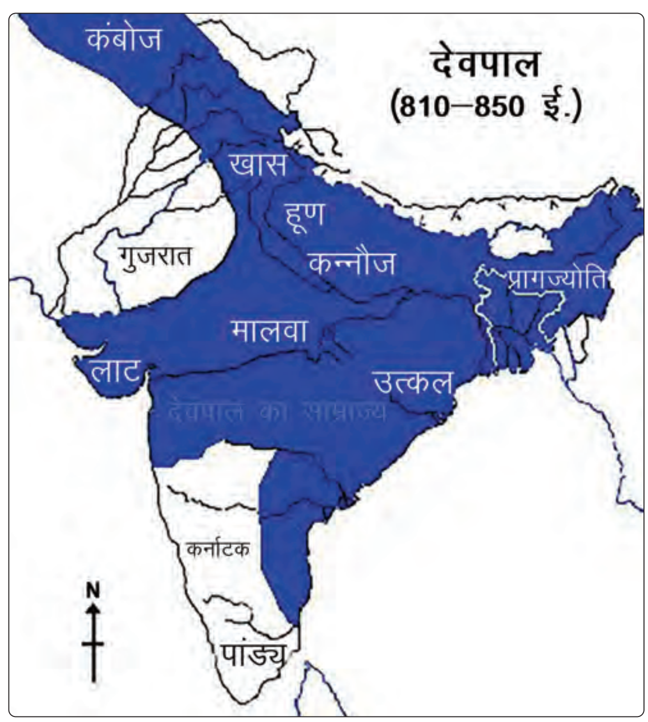

देवपाल का साम्राज्य

देवपाल की मृत्यु, पाल वंश के पतन का आरंभ था। हालाँकि, उसके उत्तराधिकारी महिपाल ने प्रभुत्व बनाए रखने की कोशिश की, लेकिन उसके उत्तराधिकारी राजा कमज़ोर थे और धीरे-धीरे पड़ोसी राज्यों की शक्ति के समक्ष समर्पण कर बैठे थे।

प्रशासन (Administration)

पाल शासन की प्रकृति राजतंत्रीय थी और राजा ही समस्त शक्तियों का केंद्र होता था। पाल राजाओं ने सामान्यतः महाराजाधिराज, परमेश्वर और परम भट्टारक जैसी शाही उपाधियाँ धारण की थीं। पाल राजाओं ने राज्य के सर्वोत्तम प्रशासन के लिए प्रधानमंत्रियों की नियुक्ति भी की थी। प्रशासनिक दृष्टि से पाल साम्राज्य कई भुक्तियों (प्रांतों) में विभाजित था। भुक्तियों को विषयों (संभाग) और मंडलों (जिले) में विभाजित किया गया था। छोटी इकाइयों को खंडाला, भग, प्रवृत्ति, चतुरका और पट्टका के नाम से जाना जाता था। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि पाल साम्राज्य में प्रशासन ज़मीनी/स्थानीय स्तर से लेकर शाही दरबार तक विस्तृत और विभाजित था।

धर्म (Religion)

ओदंतपुरी

पाल राजा बौद्ध धर्म की महायान शाखा के संरक्षक थे। गोपाल-प्रथम एक कट्टर बौद्ध था तथा उसने ओदंतपुरी में प्रसिद्ध मठ का निर्माण कराया था। उसके पुत्र धर्मपाल ने प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक हरिभद्र को अपना आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनाया था।

हरिभद्र

उसने प्रसिद्ध विक्रमशिला मठ (भागलपुर, बिहार के पास स्थित) और बांग्लादेश में सोमपुरा महाविहार की स्थापना भी की थी। उसकी मृत्यु के बाद देवपाल ने सोमपुरा महाविहार में वास्तुकला का पुनर्निर्माण और विस्तार किया, जिसमें महाकाव्य रामायण और महाभारत के कई विषय शामिल थे। महिपाल प्रथम ने जीर्णोद्धार कार्य किया और बोधगया, सारनाथ व नालंदा में कई पवित्र स्थलों के निर्माण और मरम्मत का आदेश दिया था।

सोमपुरा महाविहार

बौद्ध धर्म के अलावा, उत्तरवर्ती पाल शासकों ने शैव सन्यासियों का भी समर्थन किया। नारायण पाल ने स्वयं एक शिव मंदिर की स्थापना की और ब्राह्मणों को संरक्षण दिया। बौद्ध देवताओं की मूर्तियों के अलावा, पाल वंश के बाद के शासन के दौरान विष्णु, शिव और सरस्वती की मूर्तियों का भी निर्माण किया गया था।

सोमपुरा महाविहार

अर्थव्यवस्था (Economy)

- पालों के शासनकाल में सामान्य आर्थिक एवं भौतिक समृद्धि थी।
- पाल काल में कृषि मुख्य व्यवसाय था।
- पाल राजाओं ने किसानों को खेती के लिए ज़मीनें दी थीं और लोगों की आय का मुख्य स्रोत उन्हें दी गई ज़मीन के कृषि उत्पाद थे। इस अवधि के दौरान धान की खेती बंगाल में अर्थव्यवस्था का मुख्य स्रोत बन गई थी। इसका उल्लेख देवपाल के 'मोंगहिर (मुंगेर) शिलालेख' के साथ-साथ नारायण पाल के 'भागलपुर शिलालेख' में भी किया गया है।
- कृषि के अलावा, पाल काल के दौरान खनिज संसाधन भी अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण घटक थे। हालाँकि, लौह अयस्क का उपयोग बहुत व्यापक स्तर पर नहीं होता था, फिर भी अयस्क को गलाने की प्रक्रिया बंगाल के लोगों को अच्छी तरह से ज्ञात थी।
- पाल साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में तांबे के भंडार और मोती भी पाए जाते थे।
- बंगाल में पालों के शासनकाल में कृषि आधारित उद्योग समृद्ध हुआ था। साथ ही, वस्त्र उद्योग भी प्रगति कर रहा था और सूती कपड़ा बंगाल का प्रमुख उद्योग था।
- इस अवधि के दौरान बंगाल में रेशम उद्योग भी बहुत लोकप्रिय था और यह न केवल घरेलू बाजार, बल्कि विदेशी बाज़ार तक भी पहुँच रखता था।
- हालाँकि, पाल काल में अर्थव्यवस्था विकसित हुई थी, फिर भी व्यापार और वाणिज्य में सामान्य गिरावट देखने को मिली थी। पाल काल के सिक्कों से व्यापार के मानकों में गिरावट संकेत मिलता है।
- सोने और चाँदी के सिक्कों की कमी के कारण तांबे के सिक्कों पर निर्भरता बढ़ गई थी। इसके परिणामस्वरूप विदेशी व्यापार में बड़ी गिरावट आई।

परिणामस्वरूप, आर्थिक व्यवस्था पूरी तरह से कृषि पर निर्भर हो गई तथा समृद्ध कृषि अर्थव्यवस्था ने सामंतवादी समाज (Feudalistic

Society) को जन्म दिया। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि पाल शासनकाल के दौरान कृषि अर्थव्यवस्था और सामंतवाद एकसाथ विकसित हुए थे।

साहित्य (Litreture)

- पाल राजाओं ने कई संस्कृत और बौद्ध विद्वानों को संरक्षण दिया, जिनमें से कुछ को अपने अधिकारी के रूप में भी नियुक्त किया गया था।
- रचना की गौड़ रीति शैली का विकास पाल शासनकाल के दौरान हुआ था।
- इस दौरान कई बौद्ध तांत्रिक रचनाएँ लिखी गई और अनुवादित भी की गई थीं। तिब्बत में वर्तमान में भी इनका प्रभाव है।
- जिमुतवाहन, संध्याकर नंदी, माधव-कारा, सुरेश्वर और चक्रपाणि दत्त पाल काल के कुछ महत्त्वपूर्ण विद्वान हैं।
- आद्य-बंगाली भाषा के आरंभिक लक्षण पाल काल में रचित चर्यापदों में भी देखे जा सकते हैं।

कला और वास्तुकला (Art and Architecture)

पाल काल की मूर्तिकला कला को भारतीय कला में एक विशिष्ट मान्यता प्राप्त है तथा यह बंगाल के मूर्तिकारों की कलात्मक प्रतिभा को चिह्नित करती है। यह काफ़ी हद तक गुप्त कला से प्रभावित तथा प्रेरित थी। जैसा कि पहले चर्चा की गई, बौद्ध पालों ने कई मठों और अन्य पवित्र स्थलों का निर्माण किया था। वर्तमान बांग्लादेश में सोमपुरा महाविहार को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा दिया गया है। विक्रमशिला, ओदंतपुरी और जगद्दला सहित अन्य विहारों की विशाल और भव्य संरचनाएँ पाल वंश की अन्य उत्कृष्ट देन हैं।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय

पाल काल में निर्मित मंदिरों में एक विशिष्ट वंग शैली का चित्रण किया गया था। बर्दवान जिले के बराकर में सिद्धेश्वर महादेव मंदिर प्रारंभिक पाल शैली का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। टेराकोटा मूर्तिकला सजावटी उद्देश्यों के लिए बहुत लोकप्रिय थी। चित्रकला में दीवार चित्रकला के लिए भित्ति चित्र अत्यधिक लोकप्रिय थे। इस काल में लघु चित्रकला का भी काफ़ी विकास हुआ।

सिद्धेश्वर महादेव मंदिर

2.2 प्रतिहार (8वीं शताब्दी ई.) [Pratiharas (8th Century)]

परिचय (Introduction)

प्रतिहार राजवंश को गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के रूप में भी जाना जाता है। इसने शताब्दी के मध्य से लेकर उत्तरी भारत के अधिकांश भाग पर शासन किया। ऐसा माना जाता है कि इसने पहले उज्जैन से शासन किया और बाद में कन्नौज में अपनी राजधानी स्थापित की।

गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य, इंडिया

इस राजवंश का संस्थापक हरिचंद्र था, जिसने छठी शताब्दी में इसकी स्थापना की थी। नागभट्ट-प्रथम (730-756 ई.) इस वंश का पहला प्रसिद्ध शासक था, जिसका साम्राज्य मंडोर (जोधपुर) से लेकर मालवा, ग्वालियर और भरूच तक था। उसकी राजधानी मालवा में अवंती थी।

प्रभाव का राजनीतिक क्षेत्र (Political Sphere of Influence)

मोहम्मद कासिम द्वारा सिंध की विजय के बाद, सिंधु नदी के पूर्व की ओर बढ़ने वाली अरब सेनाओं को रोकने में गुर्जर-प्रतिहारों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। नागभट्ट-प्रथम ने जुनैद और तमिन के नेतृत्व में अरब सेनाओं को हराया, जिन्होंने भारत में खिलाफत अभियानों के दौरान अपना प्रभाव बढ़ाने की

नागभट्ट प्रथम

कोशिश की थी। नागभट्ट-प्रथम का उत्तराधिकारी वत्सराज था, जिसने कन्नौज पर कब्ज़ा कर लिया था। इससे प्रतिहारों का बंगाल के पालों के साथ संघर्ष आरंभ हो गया था। हालाँकि, वत्सराज ने धर्मपाल को हराया था, लेकिन 786 ई. में राष्ट्रकूट राजा ध्रुव ने उसे हरा दिया था।

सोमनाथ मंदिर

वत्सराज का उत्तराधिकारी नागभट्ट-द्वितीय था। नागभट्ट-द्वितीय के शासन में गुर्जर-प्रतिहार उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली राजवंश बन गया था। सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए नागभट्ट-द्वितीय की सराहना की जाती है, जिसे जुनैद के नेतृत्व में खलीफा सेनाओं ने नष्ट कर दिया था। यह पुनर्निर्मित संरचना लाल बलुआ पत्थर की एक बड़ी संरचना थी, जिसे गजनी के महमूद ने फिर से नष्ट कर दिया था।

नागभट्ट-द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका पुत्रामभद्र था, जिसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र मिहिर भोज था। भोज और उसके उत्तराधिकारी महेंद्रपाल-प्रथम के शासनकाल में प्रतिहार साम्राज्य समृद्धि और शक्ति के चरम पर पहुँच गया था। महेंद्रपाल के शासनकाल में इसकी सीमा गुप्त साम्राज्य की सीमाओं को छूने लगी थी। यह पश्चिम में सिंध की सीमा से लेकर पूर्व में बंगाल तक और उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा से नीचे के क्षेत्रों तक विस्तृत था।

मिहिर भोज की मूर्ति

क्षेत्रों के इस विस्तार ने भारतीय उपमहाद्वीप पर नियंत्रण के लिए पाल और राष्ट्रकूट साम्राज्यों के साथ, प्रतिहारों का त्रिपक्षीय शक्ति संघर्ष आरंभ कर दिया था। इस अवधि के दौरान प्रतिहार शासकों ने महाराजाधिराज (भारत के राजाओं के महान राजा) की शाही उपाधियाँ धारण की थीं।

प्रशासन (Administration)

- अन्य राज्यों की तरह, प्रतिहार राजाओं का प्रशासन प्रकृति में राजतंत्रात्मक था।
- राजा राज्य में सर्वोच्च पद पर आसीन था और उसके पास अपार शक्तियाँ थीं। राजा ने 'परमेश्वर' और 'महाराजाधिराज' जैसी बड़ी उपाधियाँ धारण की थीं।
- राजाओं द्वारा विभिन्न सामंतों की नियुक्ति की जाती थी। सामंत अपने राजाओं को माँगे जाने पर सैन्य सहायता देते थे।
- यद्यपि, प्रशासन के मामलों में उच्च अधिकारियों की सलाह ली जाती थी, लेकिन उस काल के शिलालेखों में मंत्रिपरिषद् या मंत्रियों का कोई उल्लेख नहीं मिलता है।
- राज्य कई भुक्ति या प्रांतों में विभाजित था। प्रत्येक भुक्ति में कई मंडल होते थे और प्रत्येक मंडल में कई शहर व कई गाँव होते थे।
- इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि प्रतिहार शासकों ने प्रशासनिक सुविधा के लिए अपने साम्राज्य को विभिन्न इकाइयों में संगठित किया था।
- प्रतिहार साम्राज्य के गाँवों का प्रशासन स्थानीय स्तर पर होता था।
- गाँव के बुजुर्गों को महत्तर कहा जाता था और वे गाँव के प्रशासन की देखभाल करते थे।
- ग्रामपति राज्य का एक अधिकारी होता था, जो ग्राम प्रशासन के मामलों में सलाह देता था।
- यह देखा जा सकता है कि प्रतिहारों का प्रशासन बहुत उन्नत था। इस उन्नत प्रशासन के कारण ही प्रतिहार अरबों के आक्रमण से भारत की रक्षा करने में सक्षम हुए थे।

धर्म (Religion)

- प्रतिहारों का युग हिंदू धर्म की प्रगति का युग था।
- इनके शासनकाल में हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदायों की उन्नति हुई। वैष्णव, शैव, शाक्त और सूर्य हिंदू धर्म के प्रमुख संप्रदाय थे, जो इस काल में प्रचलित थे।
- इन संप्रदायों के लोग मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण एक पवित्र कर्त्तव्य मानते थे।
- राजाओं और अन्य धनी लोगों ने मंदिरों के निर्माण के लिए उदारतापूर्वक दान दिया।
- इस काल में बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म का पतन हो रहा था तथा ब्राह्मणवाद प्रगति कर रहा था।

अर्थव्यवस्था (Economy)

- प्रतिहार शासन में अर्थव्यवस्था मुख्यत: कृषि प्रधान थी।
- सरकारी राजस्व का प्रमुख स्रोत कृषि उत्पादन पर लगाया जाने वाला कर था।